कीटभक्षण का समय आ गया है

2013 में राष्ट्र संघ के खाद्य एवं कृषि संगठन ने एक पुस्तक प्रकाशित की थीः *'एडिबल इंसेक्ट्सः फ्यूचर प्रॉस्पेक्ट्स फॉर फूड एंड फीड सिक्योरिटी'*। अब इस पुस्तक के लेखक वेजेनिन्जन विश्वविद्यालय, नेदरलैण्ड्स के अरनॉल्ड फान हुइस इसी विषय पर एक सम्मेलन का आयोजन कर रहे हैं।

हुइस कीटभक्षण के विचार पर तब पहुंचे थे जब वे अफ्रीका में कीटों के सांस्कृतिक पहलू का अध्ययन कर रहे थे। अफ्रीका में कई लोगों के साक्षात्कारों के दौरान चिकित्सा में उपयोगी कीटों, कीट सम्बंधी मुहावरों आदि पर बातचीत के अलावा खाने योग्य कीटों पर भी काफी चर्चा होती रही। धीरे-धीरे उन्हें लगने लगा कि कीट भोजन का एक उम्दा वैकल्पिक स्रोत हो सकते हैं।

उनका कहना है कि फिलहाल कीटों को गरीबों का भोजन माना जाता है। यहां तक कि गरीब लोगों का भी कहना था कि यदि उनके पास पैसा हो, तो वे कीड़े न खाकर 'अच्छा' भोजन खाएंगे। हुइस को लगता है कि इस धारणा को बदलने की ज़रूरत है।

हुइस के मुताबिक हालांकि इस विषय पर काम करना उन्होंने शुरू किया था मगर आज कई वैज्ञानिक इस क्षेत्र में अनुसंधान कर रहे हैं। फिर भी लोग यही मानते हैं कि यह आदत सिर्फ उष्ण कटिबंध क्षेत्र में पाई जाती है।

हुइस कीट भक्षण के तमाम तकनीकी पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए बताते हैं कि आपको यह सोचना होगा कि इन्हें कैसे पालें, किस तरह के जैविक कचरे पर पालें। इस मामले में उपभोक्ताओं की पसंद-नापसंद, ज़ायके और भावनाओं का भी महत्व होगा। हुइस ने कीटों को लेकर एक व्यंजन पुस्तिका भी तैयार की है। इस संदर्भ में उन्होंने कई मशहूर शेफ्स से संपर्क किया जो कीटों के व्यंजन बनाकर परोसते हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***